अवसर देर सवेर हर उस व्यक्ति के पास आता है जो इसकी इच्छा रखता है।
– अज्ञात

# ऊंट आखिरकार किस करवट बैठेगा!

**कांग्रेस विधायकों के इस्तीफे कई राज्यों में राज्य सभा चुनावों का समीकरण बिगाड़ चुके हैं। इस क्रम में दलबदल विरोधी कानून निरर्थक सिद्ध हुआ है सो अलग। मध्य प्रदेश में कमलनाथ सरकार का गिरना एक ऐसे संकट की शुरुआत है, जिसका कोई तोड़ कांग्रेस अभी के माहौल में नहीं खोज पा रही।**

आरती वर्मा।

सोमवार को सत्तारूढ़ विधायक दल की बैठक में 102 सदस्यों की मौजूदगी की खबर के बाद राजस्थान में कांग्रेस की अशोक गहलौत सरकार पर अचानक आई आफत टल जाने का दावा किया जा रहा है। 200 सदस्यों वाली राजस्थान विधानसभा में बहुमत के लिए 101 सदस्य काफी होते हैं, इसलिए मान लिया गया कि गहलौत सरकार के अल्पमत में होने संबंधी सचिन पायलट का दावा फिलहाल स्वीकार किए जाने योग्य नहीं है। फिर भी ऊंट आखिरकार किस करवट बैठेगा, इस बारे में अभी से कुछ नहीं कहा जा सकता। देश भर में कांग्रेस की स्थिति देखें तो दो बातें बिल्कुल स्पष्ट हैं। एक, जिन राज्यों में कांग्रेस लंबे समय से सत्ता से बाहर है, वहां उसकी स्थिति बहुत बुरी है, और दो, जिन राज्यों में वह किसी तरह सत्ता में आ गई है, वहां उसकी स्थिति और ज्यादा बुरी है। इन राज्यों में अपनी सरकार बचाना और अपने लोगों को जोड़कर रखना उसके लिए लोहे के चने चबाने जैसा साबित हो रहा है।

कांग्रेस विधायकों के इस्तीफे कई राज्यों में राज्य सभा चुनावों का समीकरण बिगाड़ चुके हैं। इस क्रम में दलबदल विरोधी कानून निरर्थक सिद्ध हुआ है सो अलग। मध्य प्रदेश में कमलनाथ सरकार का गिरना एक ऐसे संकट की शुरुआत है, जिसका कोई तोड़ कांग्रेस अभी के माहौल में नहीं खोज पा रही। याद रहे, कमलनाथ ने अपने बेटे को लोकसभा चुनाव जीतने के तुरंत बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मिलवा कर यह संकेत दे दिया था कि उनपर ज्यादा दबाव आया तो अपनी आखिरी पारी वे बीजेपी के साथ खेलने में संकोच नहीं करेंगे।

ऐसे में ज्योतिरादित्य सिंधिया को अपने रास्ते जाने के लिए छोड़ देने का कोई विकल्प कांग्रेस नेतृत्व के सामने नहीं बचा था। यह दृश्य एक राज्य तक सीमित नहीं रहने वाला। लंबे समय तक कांग्रेस अपने शीर्ष पर गांधी–नेहरू परिवार के करिश्मे से बंधी रही और प्रदेश स्तर पर गिनती के दो–चार प्रभावशाली नेताओं के जोर से संचालित होती रही। प्रदेश स्तर के इन नेताओं में जो आलाकमान का ज्यादा करीबी हो जाता, उसकी तूती बोलने लगती। जो लोग उपेक्षित महसूस करते वे केंद्र में कुछ पा जाने की आस लगाते, या फिर अपने अच्छे दिनों की बाट जोहते।

यह किस्सा धीरे–धीरे बिसरने की ओर बढ़ गया है। पिछले कुछ वर्षों से बीजेपी के एक अखिल भारतीय दल में रूप में जबर्दस्त उभार और केंद्र के साथ ही सारे राज्यों में भी मजबूत उपस्थिति ने पुराने शक्ति समीकरण को बिल्कुल बदल दिया है। कांग्रेस के असंतुष्ट क्षत्रपों के सामने बीजेपी के रूप में एक मजबूत विकल्प हमेशा उपलब्ध है लिहाजा इस पार्टी को जोड़े रखने वाले पुराने तौर–तरीके काम के नहीं साबित हो रहे। इस प्राणांतक चुनौती से निपटने के लिए कांग्रेस नेतृत्व को ज्यादा गतिशील और लोकतांत्रिक होना पड़ेगा। वैचारिक लड़ाई की धार भी कुछ हद तक सत्ता की कमी की भरपाई कर सकती है, लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस का मंच संभालने का मौका एक या दो 'पारिवारिक' चेहरों को छोड़कर किसी और को कहां मिलता है!

## अपना ध्यान

**अशोक वोहरा।**

धर्म-दर्शन

वह अपना ध्यान अपने काम पर, स्वादिष्ट खाना खाने पर या मधुर संगीत सुनने पर केंद्रित करने में सक्षम नहीं हो पायेगा। आपकी पूरी क्षमता आपको इस परिस्थिति से निपटने में मदद करेगी और शीघ्र ही आप इस समस्या को सुलझा पायेंगे।हर व्यक्ति जीवन में कभी ना कभी किसी संकट या समस्या का सामना करता है। जितना अधिक आप इसे महत्ता देंगे, उतना अधिक यह प्रबल होता जायेगा। जितना अधिक आप इसके बारे में बात करेंगे, उतना अधिक यह आपकी भावनाओं को प्रभावित करेगा। अक्सर लोगों को लगता है, "यह मेरे साथ ही क्यों हो रहा है?" 'मैंने ऐसा क्या कर दिया कि यह सब मेरे साथ हो रहा है?' 'उसने यह मेरे साथ ही क्यों किया?' नकारात्मक विचार पर काबू पाने के बजाय एक व्यक्ति को 'आगे क्या करना चाहिए' इस बात पर ध्यान देना चाहिए।

## संपादकीय

### दोस्ती करे या दुश्मनी

नेपाली प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने 2018 में चीनी रेलवे की एक लाइन शिगात्से से काठमांडू–पोखरा ले जाने का समझौता चीनी हुकूमत के साथ किया था, जिसकी दूसरी शाखा को सुदूर पश्चिम में कराकोरम दर्रे से होकर पाकिस्तान रेलवे के साथ जोड़ देने की योजना चीन की तरफ से घोषित हुई थी। पूंजी की कमी और भारत के दबाव से इन दोनों रेलवे लाइनों का कैलेंडर अभी वहीं ठहरा हुआ है। कुछ सर्वे हुए हैं लेकिन लाइन बनाने के लिए पहली कुदाल गिरना बाकी है। यहां से और पश्चिम जाने पर एक बफर स्टेट के रूप में नेपाल और फिर उत्तराखंड की सीमा अपेक्षाकृत शांत मानी जाती रही है। लेकिन यहीं कालापानी, लिपुलेख और लिंपियाधुरा का नया विवाद इधर ओली की कृपा से उभर आया है। देखें, इसका फायदा चीन किस रूप में उठाता है। इसके उत्तर–पूर्व में कैलाश पर्वत और मानसरोवर झील के साथ तिब्बत का पश्चिमी ढाल शुरू हो जाता है, जिस पर पहले सतलज, फिर सिंधु नदी आती है।

गलवान घाटी और पैंगांग त्सो जैसी जगहें इन दोनों नदियों के बीच पड़ती हैं। यहां वास्तविक नियंत्रण रेखा के उस पार तिब्बत का न्गारी उपप्रांत है, जो हरे–भरे पूर्वी तिब्बत के बरक्स बिल्कुल नंगा है। वनस्पति के नाम पर कुछ महीने भेड़–बकरियों के खाने भर को घास मिल पाती है। ईरान के तेल, अफगानिस्तान के खनिज और पाकिस्तान के बाजार के अलावा हिंद महासागर में अपनी नौसेना रखना भी चीन के रणनीतिक अजेंडे का हिस्सा है। भारत के साथ वह दोस्ती करे या दुश्मनी, इस मुद्दे पर मुरव्वत हरगिज नहीं दिखाएगा।

सबसे बड़ी बात यह कि सिक्किम का कलिंपोंग शहर 1962 तक तिब्बत की दिमागी राजधानी माना जाता था। ये सारे स्रोत पिछले 58 वर्षों में गायब हो चुके हैं।

# सीमा के उस पार

चंद्रभूषण

भारत और चीन की सेनाएं पिछले तीन वर्षों में दो बार आमने–सामने आ चुकी हैं। डोकलाम में यह तनाव काफी लंबा चला और लद्दाख में और लंबा खिंचने का अनुमान है। सीमा टकराव की स्थिति में संतुलित और प्रभावी प्रतिक्रिया के लिए दूसरी तरफ की अधिकतम जानकारी हमारे पास होनी चाहिए। अंग्रेजी राज की दस्तावेजी परंपरा में आजादी के कुछ वर्ष बाद तक यह जानकारी हमारे पास थी। फिर 1958 में दलाई लामा, उनके पीछे–पीछे अनुयायियों और चीनी हुकूमत के खिलाफ बगावत करने वालों की एक बड़ी जमात भी भारत आई, जिसके पास तिब्बत के चप्पे–चप्पे से जुड़ी सूचनाएं मौजूद थीं। सबसे बड़ी बात यह कि सिक्किम का कलिंपोंग शहर 1962 तक तिब्बत की दिमागी राजधानी माना जाता था। ये सारे स्रोत पिछले 58 वर्षों में गायब हो चुके हैं।

1962 के युद्ध में चीन को तिब्बत से काफी दूर बताने की गलती सीआईए की ओर से हुई थी, जिसकी जड़ यह थी कि चीन की प्रमुख पश्चिमी सैनिक छावनी छंग्तू (चेंगडू) तिब्बत की सीमा से डेढ़ हजार किलोमीटर की दुर्गम पहाड़ी दूरी पर है। यह दूरी आज भी वही है पर आवाजाही आसान हो गई है। नई बात यह कि 2026 में ल्हासा और छंग्तू के बीच ट्रेनें चल रही होंगी। तिब्बत की राजधानी ल्हासा आज भी रेलवे के जरिये चीन के सभी बड़े शहरों से जुड़ी है, हालांकि रास्ते बहुत लंबे हैं। तिब्बत के भारत से सटे नक्शे पर नजर डालें तो सबसे पूरब में टकराव अरुणाचल प्रदेश की समूची सीमा पर है। यह इलाका, खासकर इसका पूर्वी छोर चीन के लिए एडवेंचर टूरिज्म और भारत के लिए पनबिजली का गढ़ बनने जा रहा है। इसके चलते यहां दोनों देशों के बीच टकराव के मौके आते रहेंगे। लेकिन मामले का दूसरा पहलू यह है कि यहां वास्तविक नियंत्रण रेखा के हमारी तरफ वाले हिस्से में आबादी कम हो रही है, जबकि उनकी तरफ यह तेजी से बढ़ रही है।

संयोगवश 2015 में, जब भारत और चीन के कूटनीतिक रिश्ते युद्धोत्तर काल के सबसे अच्छे दौर में थे, भारतीय और नेपाली पत्रकारों के एक दल के सदस्य के रूप में मुझे तीन दिन तिब्बत के इसी न्यिंग्ची उपप्रांत में बिताने का मौका मिला था। यहां उनके नए–नए विकसित हो रहे शहर बायी में तटीय चीनी राज्यों की जबर्दस्त पूंजी लगी है। भारत, चीन और म्यांमार की सीमा पर ब्रह्मपुत्र नदी (यारलुंग त्सांगपो) डेढ़ किलोमीटर की खड़ी उतराई काटती है और अमेरिकी ग्रैंड कैन्यन से कहीं रोमांचक खड्डों की श्रृंखला बनाती है। यहां पश्चिम की ओर बढ़ें तो 1967 में सिक्किम और चीन की सीमा पर भारतीय और चीनी सेनाओं के बीच बड़ा टकराव दर्ज मिलता है। तब सिक्किम भारत का अंग नहीं था। एक समझौते के तहत उसकी प्रतिरक्षा और विदेश नीति का जिम्मा भारत संभाल रहा था।

1975 में सिक्किम का विलय भारत में हो गया और शुरुआती ऐतराज के बाद सिक्किम–चीन सीमा ही भारत–चीन सीमा बन गई। लेकिन 2017 में भूटान के डोकलाम इलाके को लेकर बने तनाव ने इस सेक्टर में भी आशंकाएं बढ़ा दी हैं। इस इलाके की एक और खासियत यह है कि चीनी रेलवे के यह सबसे नजदीक है। यहां से 200 किलोमीटर दूर तिब्बत के नंबर दो शहर शिगात्से में एक समय बगावत की ज्वाला भड़कती थी।

### अष्टयोग- 5116

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | 6 | | 7 | |
| 4 | 33 | 4 | 40 | 7 | 31 | 2 |
| | 2 | | 3 | 5 | | |
| 1 | 29 | 3 | 37 | 6 | 35 | 5 |
| | | 7 | 4 | | 5 | |
| 6 | 30 | 2 | 24 | 1 | 30 | 3 |
| | 6 | | 4 | | | |

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

**अष्टयोग 5115 का हल**

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 5 | 7 | 4 | 2 | 1 | 6 |
| 1 | 30 | 2 | 37 | 6 | 31 | 3 |
| 5 | 1 | 6 | 3 | 7 | 2 | 4 |
| 6 | 37 | 3 | 34 | 1 | 25 | 5 |
| 4 | 7 | 5 | 6 | 3 | 2 | 1 |
| 7 | 33 | 4 | 32 | 4 | 30 | 2 |
| 2 | 3 | 1 | 4 | 5 | 6 | 7 |

Jagrutidaur.com, Bangalore

## अपना ब्लॉग

### भारत का संपर्क इधर से कट गया

**मोहन।** न्गारी और लद्दाख को तिब्बती, मंगोल, तुर्क और फारसी सभ्यताओं की मिलनस्थली के रूप में जाना जाता है। पुराने भारत की पहुंच यहां तक गिलगित–बाल्टिस्तान से कराकोरम दर्रे के जरिये हुआ करती थी। ये इलाके पाकिस्तान के कब्जे में चले गए तो भारत का संपर्क इधर से कट गया। हाल यह हुआ कि चीनियों ने अक्साईचिन में एक सड़क बनाई और 1958 के अपने नक्शे में उसे दिखा दिया तो नेहरूजी ने हालात का जायजा लेने के लिए जो दल वहां भेजा, वह श्रीनगर से चलकर 16 दिन बाद वहां पहुंचा। ऐतिहासिक महत्व वाली उस सड़क पर दोबारा गिट्टियां अभी 2013 में पड़ी हैं। चीनियों के लिए इस इलाके का महत्व अपने दोनों बागी प्रांतों शिनच्यांग और तिब्बत को जोड़े रखने तक ही सीमित था, लेकिन अभी पूर्वी समुद्रों में खतरा भांपकर पश्चिम की निकासी उनके लिए ज्यादा जरूरी हो गई है।